International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 9 Issue 6, Nov-Dec, 2021, Impact Factor: 7.326

नासिरा शर्मा के उपन्यासः आधुनिकता बोध और नारी सन्दर्भ

सोनिया[1], डॉ. कमला कौशिक[2]

[1]शोधार्थी, हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा
[2]प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

सार

आधुनिकता एक सोच है, एक विचार है , जो व्यक्ति को इस दुनिया के प्रति अधिक जागरूक व मानवीय दृष्टिकोण से जीने का सही मार्ग दिखलाती है. आज जीवन का हर क्षेत्र आधुनिकता से परिपूर्ण है. आधुनिकता केवल विकसित या विकासशील देशों में ही नहीं अपितु जीवन के हर क्षेत्र में देखी जा सकती है. आज हर देश एक दूसरे की आधुनिकता को आत्मसात करने में लगा हुआ है. कुछ देश आधुनिकता को अपने अस्तित्व के लिए खतरा भी समझ रहे है. आधुनिकता कि शुरुआत कहाँ से मानी जाये यह एक ऐसा प्रश्न है जो हमेशा साहित्यकारों, इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों आदि को कचोटता रहा है. अगर हम आधुनिकता को ठीक–ठाक से समझना चाहते है तो मन एवं आत्मसात कि प्रक्रियां को समझना बहुत आवश्यक है. किसी भी वस्तु को मन जब आत्मसात करता है तभी हम उसकी उपयोगिता को ग्रहण करते है. आधुनिकता पूर्ण रूप से मानसिक प्रक्रिया है. मन ही अपने अनुसार परम्परा एवं आधुनिकता कि परिपाटी बनाता है. जब मन यह प्रक्रिया पूर्ण करता है तो मानवीय देह भी उसके अनुसार कार्य करने लग जाती है।.

बीज शब्द : हिन्दी साहित्य, नारी, स्वरूप, योगदान ।

परिचय

नासिरा शर्मा कम्युनिस्ट विचारधारा को मानने वाले कुछ लोगों की सीमाओं और उपभोक्तावाद के दोगलेपन की आलोचना करती है लेकिन वे कम्युनिस्ट विचारधारा की विरोधी नहीं समर्थक हैं क्योकि महरुख़ ने अपने सकर्मक जीवन के माध्यम से इसी विचारधारा को सार्थक बनाया। यह भी कह सकते हैं कि वह इस विचारधारा पर चलकर सार्थक पात्रा बनी।

उपन्यासकार का उद्देश्य पार केवल गुण–दोषों का या बाहरी आकार–प्रकार का वर्णन करना ही नहीं अपितु उसके अन्तःकरण के सम्पूर्ण रुझान परिस्थिति की उसके मन होनेवाली प्रतिक्रिया, विभिन्न प्रसंगों में उसके अन्तर उत्पन्न विचार आदि चित्रण करना होता है। सामाजिक जीवन में जो पात्र हैं और उपन्यासों पात्रों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। उपन्यासकार पात्रों का चुनाव परिवेश से करता है। वह कई जीवित व्यक्तियों के आकार–प्रकार और अपनी कल्पना के अनुसार ढालकर पात्रों का निर्माण करता है। इनका चयन सामाजिक

जीवन से होने के कारण सामाजिक विषमताओं को व करने में आसानी है। रचनाकार पात्रों को उसकी दुर्बलताओं एवं कुरूपत को चित्रित करने के साथ आदर्श पक्ष को भी प्रस्तुत करता है।'

कथानक में मुख्य रूप से दो प्रकार के पात्र होते हैं – मुख्य एवं गौण पात्र । मुख्य पात्र उपन्यास के केन्द्र होते हैं। नासिराजी के नदियाँ एक समन्दर में सात लड़कियाँ मुख्य रूप से आती हैं – परी, तय्य अख्तर, मलीहा, सूसन, महनाज़ और सनोबर। ये लड़कियाँ दोस्त हैं अलग–अलग विचार वाले थे। इनके अलावा असलम, महानाज़ की सुलेमान शहनाज़, खालिद, फरीद, अब्बास–सूसन का पति आदि क पात्र भी है जो उपन्यास की कथानक को आगे बढाने में विविध प्र सहायक रूप से उपस्थित हुए हैं। इन सभी पात्रों में तय्यबा ही मुख उपन्यास की विषय के करीब जुड़ी है।

इन पात्रों में तय्यबा अलग तबके के विचारवाला लड़की अन्य लड़कियों जैसा भावुक नहीं है, वह इश्क अपने काम से कर उसके मन में विद्रोह है, क्रान्ति है वह अन्य लड़कियों की तरह सोच वाली नहीं। उनका विचार है घर की मनहूसियत को फेंकने लोग जंगल ओर जाते हैं रू पर अपने अंदर की मनहूसियत को कहाँ उगलेगे कहकहों दावतों, फैशन और तेज़ फर्राटे भरती कारों में...? तय्य सहेलियाँ जब पारिवारिक जीवन में फंस गये लेकिन वह एक क्रान्तिक जीवन जीना पसन्द करती है। वह देश के लिए जीने वाली थी और वतन के लिए वह अपना जीवन समर्पित कर दिया था।

नासिरा जी के उपन्यास शाल्मली में मुख्य पात्र शाल्मर इनके जीवन से जुड़े अन्य पात्र है नरेश, शाल्मली के माँ–बाप, शाल्मली की सास आदि । ये सभी पात्र कथानक में विविध प्रसंगों ? सहायक रूप से उपस्थित हुए है। इसमें शाल्मली के माध्यम से आशिक्षित और आत्मनिर्भर नारी के अन्तर्द्वन्द्व को दिखाया है। साथ है शिक्षित कामकाजी नारी के पारिवारिक जीवन का चित्रण भी मिलता है।

शाल्मली एक स्वावलंबी नारी है। वह एक ऐसी नारी है जं आत्मविश्वास के साथ कठिन प्रतिकूल परिस्थिति में जीकर अपने स्व के बनाये रखती है। आधुनिक नारी को समाज ने काम करने और कमाने क मौका तो दिया पर पारिवारिक जिम्मेदारियों से उसे कोई छूट नहीं मिली गृहस्थी के कार्यों के अतिरिक्त उस पर नौकरी का बोझ भी बढ़ गया है।

शाल्मली अपनी माँ–बाप की एकमात्र संतान है। वह पढ़ लिखकर एम.ए. पास हुआ। उसके बाद उनकी शादी नरेश से होती है। बाद में वह ऐ.ए.एस प्रतियोगिता पास करके नौकरी में प्रवेश करता है। शाल्मली एक सुधड़, सुशील पत्नी भी है। शाल्मली एक औरत होने पर गर्व करती है और पति से कहती है – 'औरत होकर मुझ पर टीका–टिप्पणी मत किया करो दूसरे, औरत की अक्ल पर शक करना छोड़ दो। एक स्तर के बाद हम औरत – मर्द नहीं रह जाते हैं, बल्कि हमारा काम हमारी पहचान होती है हमारी अक्ल हमारी कसौटी होती है।

नरेश का व्यवहार शाल्मली के प्रति बहुत बुरा है। शाल्मल अच्छी तरह जान जाती है कि उसके घर की नींव हिल गयी है। ऊपर भले ही वह नरेश के प्रति समर्पित हो जाती है, परन्तु

भीतर ही भीतर अपर्न अस्मिता को वह पहचानती है। वह भी दृढ़ होकर नरेश को दिखा देती है

कि वह नरेश की छाया, प्रतिध्वनि या विस्तार नहीं है। उसकी अपनी एक अलग पहचान है। मैं कोरा कागज़ नहीं थी, जिस पर तुम अपने अधिकार का हस्ताक्षर कर सकते। मैं तो फुलकारी का वह रेखाचित्र थी, जिसे बचपन से पिताजी ने बड़े जतन से खींचा था। प्रत्येक रेखा में उनकी आत्मा शाल्मली नरेश के बुरे व्यवहार से तंग आकर अपने दुःख को अकेले अंतर ही अन्तर पीती है। शाल्मली का मित्र सरोज से जो संभाषण हुए उससे स्त्र मुक्ति की अवधारणा सामने आता है । शाल्मली कहती है श्मेरी नज़र में सह नारी–मुक्ति और स्वतन्त्रता, समाज की सोच और स्त्री की स्थिति को बदलने में हैं। बाहर निकलो या घर में रहो, हर स्थान पर पुरुष तुमसे टकराएगा तलाक लेना समस्या का समाधान नहीं है । शाल्मली आगे कहती है औरत के पास दो ही अभिव्यक्तियाँ है या सर झुका देना या समस्या को अधुरा छोड़ सर कटा लेना । मेरा विश्वास न घर छोड़ने पर है, तोड़ने पर, न आत्महत्या पर है, न अपने को किसी एक के लिए स्वाहा करने में है। मैं तो घर के साथ औरत के अधिकार की कल्पना भी करती हूँ और विश्वास भी। अधिकार कुचल फेंकना नहीं है। यह जो हमारे मन–मस्तिष्क में अधिका भूत सवार हे गया है, वही जीवन के लिए विष समान है।

नासिरा जी की जिन्दा मुहावरे विभाजन की समस्या को लेक लिखा गया उपन्यास है। इसका मुख्य पात्र निज़ाम है । उपन्यास के अन्य पात्र है निज़ाम का पिता रहीमुद्दीन, मां, भय्या इमाम, मामी शमीमा और उनके बेट गोलू, निज़ाम की पत्नी सबीहा उनकी माँ–बाप । इस प्रकार कई अन्य पात्र में है जो उपन्यास के कथ्य को आगे बढाने में सहायक होते । रहीमुद्दीन का वेट निज़ाम विभाजन के फलस्वरूप हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान चले गये नए युवक है। निज़ाम की तरह अनेक लोगों ने ऐसा किया था। इन लोगों के मानसिक स्थिति का चित्र निज़ाम के ज़रिए मिलता है। निज़ाम पाकिस्तान जाते हुए सोचता है जहाँ जाता हैं अब वही हमारा वतन है । नया है सही अपना तो होइए । जहाँ रोज–रोज ओकी खुद्दारी को कोई ललकारिये आदमी तो बन जाता है पर घर का मोह उसे बराबर सताता रहता है। उसक शरीर पाकिस्तान में है, पर आत्मा भारत के उस गाँव में हैं जहाँ उनके माँ बाप और सगे संबन्धी रहता है। लेकिन हिन्दुस्तान वह जा नहीं सका । जब वह वहाँ आया तब तक सब कुछ बदल चुका था । माँ–बाप तो मर चुके थे ।

हिन्दुस्तान की स्थिति बहुत अच्छी थी। गोलू का पोसिशन देकर निज़ाम उनसे कहता है पछतावा... बहुत पछतावा हो रहा है बेटे । तुम से क्य छिपाना । कुछ मजा नहीं आया जिन्दगी में सब कुछ पाकर भी। क्या खोया यह आज समझ में आया ।

ठीकरे की मँगनी का कथ्य तो उसके मुख्य पात्र महरुख के चारं ओर से बढ़ता है। केन्द्र पात्र महरुख एक नारी है। मुस्लिम समाज में स्त्र की स्थिति और रुढियों भरे ।

माहौल से बाहर निकलने के संघर्ष को महरुख के चरित्र चित्रण से उदाहृत करता है । छोटी उम्र में ही महरुख की मंगर्न रफत से हुई थी। उनके इच्छानुसार वह जे.एन.यू. पढने चली जाती है महरुख पढ़ने लिखने में होशियार है लेकिन वह विश्वविद्यालय के पाश्चात्य व

आधुनिकता से ओत–प्रोत वातावरण पसन्द नहीं करती थी। जब रफत् पढ़ने विदेश चला जाता है और एक विदेशी स्त्री से शादी करके विदेश रहते हैं और बाद में वहाँ से आकर महरुख से शादी करने के बारे में कहता है ।

तो वह कहती 'आपकी शादी की बात सुनकर मैं टूटी थी बिखरी थी और उस गम की दीवानगी में मैं मरते–मरते बची थी, फिर मेरी जिन्दगी का सबसे खूबसूरत लम्हा सबसे बद्सूरत और डरावना होकर मेरे सामने खड़ा हो गय था। जिसके बारे में मैंने सोचा नहीं था और मेरे अन्दर की औरत उसी लम्हे मर गई थी। वह आगे रफत से कहता है आपकी ज़रूरतों और मांगों के हिसाब से अब मैं अपने को बदल नहीं पाऊंगी। आपको बहुत आगे जान है और मुझे एक जगह ठहर कर वहुत लोगों के साथ चलना है। हमारी जिन्दगी के लक्ष्य और उद्देश्य एक नदी के दो किनारे हैं ।

नासिरा शर्मा के हर पात्र और घटना यथार्थ जी निकट रहनेवाले हैं। कहानी में पात्रों की संख्या सीमित रहता है । प्रमु का चरित्रांकन करते हुए विशेष घटनाओं को प्रस्तुत किया जा नासिराजी की कहानियों में सभी वर्ग के पात्रों का चित्रण हुआ है। जर मुख्य पात्र नारा ही है । कुछ कहानियों में वृद्धजन, पुरुष और बच्चे में पात्र के रूप में आते हैं। 'पत्थरगली' के लगभग सभी कहानियों का मुख्य पात्र इन कहानियों में स्त्री की दारुण स्थिति को दर्शाया है। सरहद के मुख्य पात्र तो पुरुष है । हिन्दु–मुस्लिम विद्वेष का चित्र इसमें दिख रेहान जो एक पढ़ा लिखा युवक है; हिन्दु लडकी की रक्षा करने से हत्या उनके ही जात भाइयों से होता है । कच्ची दीवार का मुख्य पात्र निस्सन्तान वृद्ध युगल है – सुगारा और बाकर अली । उनके अंतिम क संघर्ष कथा को इसमें चित्रित किया है। मुस्लिम समाज की महिलाओं की ज्वलेन समस्याओं को करनेवाला कहानी संग्रह है श्खुदा की वापसी । इसके सभी कहानि मुख्य पात्र तो नारी ही है। फरसान, सकीना, साजदा बेग जैसे किरदारों से भरा कहानियाँ है खुदा की वापसी का । दूसरे कबूत सदिया भी एक सशक्त किरदार है जो अपने पति को धोक्का देने की देती है। शादी के कई महीने बाद सादिया को पता चलता है कि पति से शादीशुदा है और तीन बच्चों का बाप भी है। दोनों पत्नियाँ, उनको एक साथ तलाक दे देता है। सबीना के चालीस चोर तो विभा बाद की सामाजिक स्थिति को बतानेवाली कहानियों का संग्रह है। नासिरा शर्मा जी ने कहानी हो या उपन्यास पात्रों की भूमिका अहम रूप से व्यक्त की है उनके हर पात्र में महत्व को बताय गया है चाहे नारी के प्रति चेतना की आवाज हो ,या समज में हो रहे अत्याचर के खिलाफ आवाज उड़ाना हो ,हम कह सकते है प्र्तेक पात्र ने अपनी भूमिका बहुत ही सजग रूप से देखने को मिलती है ।

नासिरा शर्मा कृत एक अन्य उपन्यास "ठीकरे की मंगनी' (1989) भी स्त्री पात्र को केन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है । इस उपन्यास में महरुख नाम की एक स्त्री की संघर्ष यात्रा का चित्रण है जिसकी मंगनी एक टोटके के तहत बचपन में ही ठीकरे से कर दी जाती है । इसके बाद उसे अपने खालाजाद भाई रफत मियां के साथ सारी जिंदगी के लिए बांध दिया जाता है । यहां भी महरुख शाल्मली की भंति नाजों में पली है, लाड़–प्यार में पली है और अपने से गुणों में कमतर रफत मियां को अपनी जिंदगी का आधार समझने लगती है ।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नारी पात्रों के विविध रूप

नासिरा जी का अधिकांश भाग शहरों में बीता है, पर वह गाँव की मिट्टी को बखुबी पहचानती है। ग्रामीण स्त्री के स्वाभाव और गुण को अच्छी तरह पहचानती है। स्त्रियों के अन्दर की कुंठा और अकेलापन को भी बड़े ही मनोवैज्ञानिक तरीके से उजागर करती है। सही बात यह है कि अपनी सारी रचनाओं में वे इंसान की तकलीफों को विशेष रूप से स्त्रियों की तकलीफों को व्यक्त करती है। स्त्री शक्ति का रूप है। सृष्टि के विकास क्रम में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। वह सौन्दर्य, समर्पण, ममता, करूणा, क्षमा, वात्सल्य, त्याग और दया की प्रतिमूर्ति है। उन्हीं गुणों के कारण उसे देवी कहा जाता है। स्त्री चिन्तन आज विश्व चिन्तन की बहस है, इसलिए कि उसमें करोड़ो स्त्रियों का दमन, अन्याय एवं अत्याचार से मुक्ति की सोच निहित है।

शाल्मली उपन्यास नासिरा शर्मा की प्रसिद्ध उपन्यास है। शादी के बाद शाल्मली के जीवन में एक ही ध्वनि गुंजती है कि नरेश पति है और वह पत्नी स्वामी और दासी का संबंध शाल्मली और नरेश के बीच एक मजबूत दीवार का रूप धारण करने लगी थी। नरेश हमेशा यह कहता था कि तुम ठहरी एक आधुनिक विचार की महिला, विचारों में स्वतंत्र, व्यवहार में उन्मुक्त, तुम्हारे संस्कार हमसे अलग है। नरेश का यह वाक्य सुनते–सुनते शाल्मली को आधुनिक शब्द से घृणा होने लगी थी। शाल्मली समय से पहले जीवन संघर्ष में कद पड़ी थी।

नारी पात्रः आत्मसंतापी, जिजीविषा और विद्रोही पात्र

सुख का विलोम शब्द दुख, प्रतिकूल होने के भाव का सूचक है । सब कुछ दुख, अवसाद है, कहकर गौतम बुद्ध ने सर्वप्रथम इस सिद्धांत का प्रचार किया । उन्होंने इस लोक को दुख–लोक तथा जन्म–मरण को सबसे बड़ा दुख माना । दुख से बचने के लिए गौतम बुद्ध ने अष्टांग मार्ग का प्रवर्तन किया । बौद्ध दर्शन के दुखवाद ने बाद के हिंदू दर्शनों को भी प्रभावित किया ।

वस्तुतः सुख और दुख, दिन–रात की भाँति अन्योन्याश्रित और परिवर्तनशील हैं । एक की अनुभूति के लिए दूसरे का अनुभव भी आवश्यक है । इसीलिए साहित्य में सुखात्मक संवेदना के साथ ही दुखात्मक संवेदना को भी यथोचित महत्त्व मिला है । "हिंदी साहित्य की प्रयोगशील धारा के कुछ लेखकों ने दुखवाद को एक रचनात्मक तथा प्रेरक शक्ति के रूप में ग्रहण किया है । परंतु ऐसा लगता है कि इन लेखकों का दुखवाद किसी दार्शनिक चिंतन धारा से संबद्ध न होकर वर्तमान युग में सक्रांतिकालीन विघटन से प्रेरित है ।"

डॉ. उषा यादव के अनुसार कथाकार आज के यथार्थ की कटुता को वहन करने में सक्षम है । वह पलायन या मुक्ति नहीं, अपनी पूरी जिजीविषा के साथ संघर्ष चाहता है । यथार्थ का यह अनुभव जीवन को अपनी पूरी समग्रता में ग्रहण करके व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करता है । उसे विभक्त करने के बजाय ऐसे नए आयाम देता है, जिससे नए जीवन–मूल्य उद्घाटित होते हैं, मानवीय चेतना नए संदर्भो में प्रतिष्ठित होती है तथा अनुभूतियों को नया परिवेश मिलता है । इसीलिए आज के कथा साहित्य में परंपरा का ठहराव नहीं व्यक्ति के आचरण एवं उसके

अंतःसंघर्ष को व्यापक अनुभूति के धरातल पर प्रतिष्ठा प्राप्त होती है । दुखात्मक संवेदना की नई यथार्थवादी अभिव्यक्ति आज के उपन्यासों की विशेषता है ।

जीवन को दुख–सुख की क्रीड़ास्थली मानते हुए सिम्मी हर्षिता का कथन है : "दुख सुख आते हैं, मेहमान की तरह कुछ दिन अपना संग–साथ देते हैं–मेहमानवाजी करवाते हैं । कभी हम उन्हें अपने आँसू परोसते हैं–और कभी हँसी । और फिर वे अपनी राह चले जाते हैं । वे जब भी आते हैं, वापसी की गाड़ी का टिकट साथ लेकर आते हैं । पर इनसान को आगे का सफर जारी रखना पड़ता है – उनके साथ या उनके बिना ।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1) डॉ० शिवबहादुर सिंह भदौरिया हिन्दी उपन्यासरू सृजन और प्रक्रिया, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1998
2) डॉ० एम०के० गाडगिल हिन्दी एकांकियों में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति, कानपुर–12, र्प्रथम संस्करण 1976
3) डॉ० एस०एस० नन्दा राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त, मार्डन पब्लिकेशन, जालन्धर संस्करण 1995
4) डॉ० कृष्णा जून शिवानी के उपन्यासों में नारी विमर्श, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, 4378/4, डी० 209, जे०एम०डी० हाऊस, अंसारी रोड़, दरियागंज, प्रथम संस्करण 2011
5) डॉ० जाहिदा जबीन नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य में संवेदना एवं शिल्प, निर्मल पब्लिकेशन्स ए–139, कबीर नगर, गली नद्ध 3, शाहदरा, दिल्ली–94, संस्करण 2007
6) डॉ० देवी प्रसाद गुप्ता सिद्धान्त और समालोचना, आत्माराम, दिल्ली
7) डॉ० देवराज संस्कृति का दार्शनिक विवेचन सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण 1957
8) डॉ० मदनमोहन भारद्वाज आधुनिक हिन्दी मराठी नाटकों में युग–बोध, राधा प्रकाशन प्रथम संस्करण 1986
9) डॉ० मधु सन्धू महिला उपन्यासकार, निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली–94 प्रथम संस्करण 2000
10) डॉ० मन्जुलता सिंह हिन्दी कहानी में युगबोध, पराग प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 1994
11) डॉ० रोहिणी अग्रवाल हिन्दी उपन्यासों में कामकाजी महिला, दिनमान प्रकाशन, 3014, चर्खेवालान, दिल्ली–110006 प्रथम संस्करण 1993
12) डॉ० रणधीर सिन्हा कवि बिहारी लाल और उनका युग, अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर, कानपुर
13) डॉ० स्वर्णलता विवेक स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, जयपुर, संस्करण 1975